

राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोवा के समुद्री पुरातत्व केन्द्र में कार्यरत पुरातत्वविद डॉ० अनिरुद्ध सिंह गौर गुजरात के संदर्भ में सिन्धु-सभ्यता की नौवहन परम्परा पर अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तक 'हड्ड्यन मैरीटाइम लेगसीज और गुजरात' के लेखक हैं।

## पोरबन्दर क्षेत्र में समुद्री पुरातात्विक सर्वेक्षण

### अनिरुद्ध सिंह गौर

#### प्रस्तावना :

वैसे तो पोरबन्दर महात्मा गांधी की जन्मभूमि के रूप में जाना जाता है, लेकिन विगत युगों में विशेषकर ऐतिहासिक एवं मध्ययुग में यह एक प्रमुख बन्दरगाह के रूप में पहचान रखता था। पश्चिमी काठियावाड़ तट पर स्थित इस नगरी का सम्बन्ध महाभारत काल से भी जोड़ा जाता है और इसका उल्लेख प्राचीन सुदामापुरी के रूप में मिलता है। यह नगर हिन्दू धर्म के दो प्रमुख स्थलों के मध्य स्थित है। 100 कि.मी. उत्तर-पश्चिम में द्वारका और दक्षिण-पूर्व में लगभग इतनी दूरी पर सोमनाथ स्थित है। यह नगर एक खाड़ी द्वारा घिरा हुआ है। दन्तकथाओं के अनुसार पोरबन्दर की स्थापना आज से कोई 1400 वर्ष पूर्व पौरव माता मन्दिर की स्थापना के साथ हुई थी। टॉलमी ने अपनी ज्योग्राफी में पोरबन्दर का उल्लेख बदरक्षेमा नाम से किया है। पूर्व के पुरातात्विक अन्वेषणों के अनुसार सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेष पोरबन्दर से 15 कि.मी. उत्तर पश्चिम में स्थित किन्दर खेड़ा में पाये गये हैं। पोरबन्दर के उत्तर में स्थित वारडा पर्वत शृंखला के मध्य लगभग नवीं से बारहवीं शताब्दी के समय घुमली मन्दिर स्थापत्य कला का अद्भुत केन्द्र था। इसके अलावा कुछ प्राचीन मन्दिर पोरबन्दर में देखे जा सकते हैं जो मुख्यतः मैत्रक एवं सोलंकी कालीन हैं। मध्ययुग में यह जडेजा राजपूत राजाओं की राजधानी भी रहा जिसे छांया कहते हैं। ऐतिहासिक काल में पोरबन्दर के श्रीलंका, जावा, सुमात्रा खाड़ी देशों एवं पूर्वी अफ्रीका-देशों से समुद्र के व्यापारिक संबंध थे।

#### पुरातात्विक सर्वेक्षण

सौराष्ट्र तट पर मानव आवास अत्यन्त प्राचीन है जो समुद्री गतिविधियों में संलग्न थे। प्रमुख उत्खनित पुरास्थलों में द्वारका, बेट द्वारका, सोमनाथ, पादरी एवं लोथल प्रमुख हैं (चित्र सं. 1)। पोरबन्दर समुद्री तट पर स्थित होने एवं एक बड़ी खाड़ी द्वारा घिरे होने के कारण स्वाभाविक रूप से यह क्षेत्र समुद्र व्यापार के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तटीय सर्वेक्षण के दौरान वर्तमान खाड़ी के पश्चिमी किनारे पर एक बड़े पुरास्थल की खोज की गयी। पुरातात्विक अवशेषों के अनुसार यह पुरास्थल उत्तरवर्ती सिन्धु सभ्यता से सम्बन्धित है। स्थानीय लोग इस जगह को कोटडा बन्दर के नाम से जानते हैं जो वर्तमान के भोखिरा गांव में स्थित है। यह सम्भव है कि खाड़ी के पास स्थित होने के कारण यह आवास स्थल

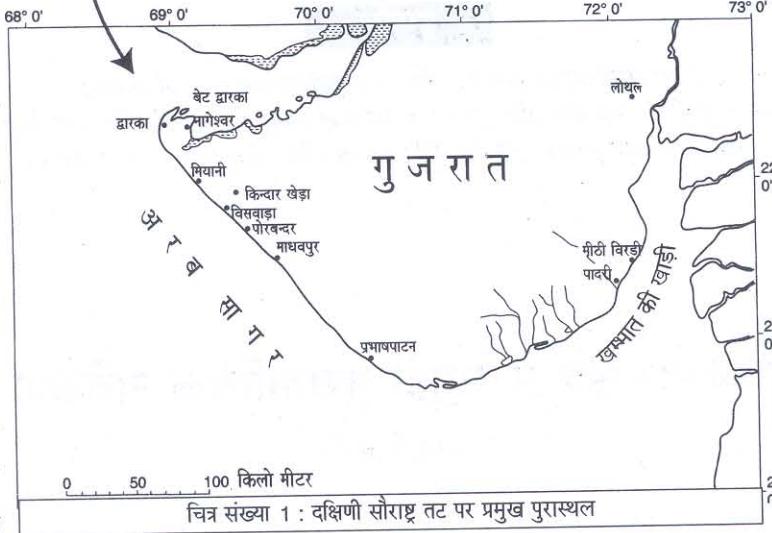
समुद्री गतिविधियों का केन्द्र रहा होगा।

भोखिरा में उत्खनन के समय काफी मात्रा में मृदूपात्र के टुकड़े पाये गये। प्रमुख पात्र प्रकारों में घड़े, कटोरे, ढक्कन एवं थालियां प्रमुख हैं। इन पात्रों पर चित्रांकन अन्य हड्प्पा संस्कृति के पुरास्थलों से मिलते-जुलते हैं। आवास का सम्पूर्ण जमाव 50 सेंटीमीटर से भी

कम है तथा प्रारम्भिक आवास पथरीले धरातल पर गड़े खोद कर गोलाकार झोपड़े जैसे घर रहे होंगे तथा कालांतर में गृह निर्माण में छोटे-छोटे पत्थरों का प्रयोग किया गया (चित्र सं. 2)। अन्य प्रमुख अवशेषों में पत्थर के औजार एवं मनके आदि मिले हैं। पुरातात्किंव अवशेषों के अनुसार इस पुरास्थल की तिथि लगभग 2000 वर्ष ईसा पूर्व है तथा स्थानीय हड्प्पा संस्कृति के समतुल्य है।

खाड़ी के किनारे पर सर्वेक्षण के समय तीन जेट्रियां प्रकाश में आयीं जो सम्भवतः मध्ययुगीन हैं। इन्हें जूना धक्का भी कहते हैं। ये खाड़ी में तीन किलोमीटर की लम्बाई में फैली हैं। प्रथम जेट्री के अवशेष वर्तमान में स्थित कन्या गुरुकुल विद्यालय के पास मिले हैं। यहां पर उच्च ज्वार के समय नावें आती थीं तथा इसका प्रयोग अधिकतर यात्रियों को उतारने एवं चढ़ाने के लिये किया जाता था। दूसरी जेट्री के अवशेष पुल के दक्षिण में खाड़ी के पश्चिमी किनारे पर देखे जा सकते हैं। काफी मात्रा में अवशेष तार रोड द्वारा ढके हुए हैं। तीसरी जेट्री श्मशान घाट के पास है।

यह जेट्री उच्च ज्वार के समय आंशिक रूप से खाड़ी में डूब जाती है। पोरबन्दर के तटीय एवं जमीनी सर्वेक्षण से समुद्री गतिविधियों पर ज्ञानर्दक प्रकाश पड़ा है। यद्यपि सौराष्ट्र तट मानव आवास का केन्द्र अति प्राचीनकाल से रहा है लेकिन पोरबन्दर में पहली बार हड्प्पा संस्कृति के अवशेष मिले हैं और इसने यहां के इतिहास की तिथि को 4000 वर्ष पीछे धकेल दिया है। इससे इस तथ्य को भी बल मिलता है कि हड्प्पा काल में नदियों एवं खाड़ियों के प्रयोग को समुद्री गतिविधियों के लिये



प्रमुखता दी जाती थी।

पोरबन्दर के आसपास समुद्री पुरातत्व सर्वेक्षण उपर्युक्त सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप पोरबन्दर से पश्चिम में 60 किलोमीटर पर स्थित मियानी से लेकर पूर्व में स्थित टुकड़ा तक समुद्री पुरातत्व सर्वेक्षण किया गया। अन्तर्जलीय सर्वेक्षण मुख्यतया खाड़ी एवं नदी मुहानों पर केन्द्रित रहा।

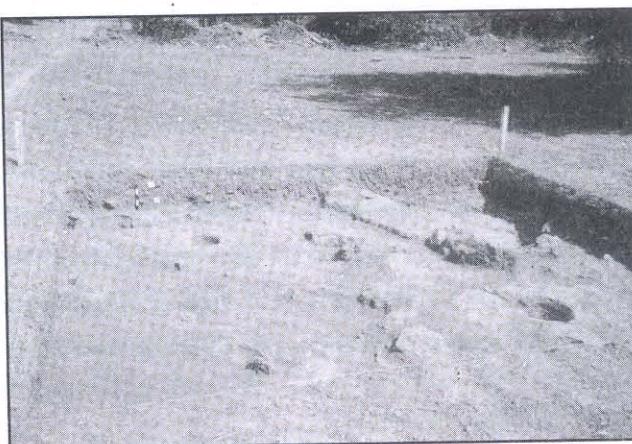
विभिन्न स्थलों पर हुए सर्वेक्षणों का विवरण निम्न प्रकार है।

### मियानी या हर्षद माता

मियानी सोलंकी कालीन मन्दिरों के लिये प्रसिद्ध है। यहां कई मन्दिर जो अद्भुत स्थापत्य कला के नमूने हैं, पूर्णतया संरक्षित हैं। तट पर एक ऊँची पहाड़ी पर हर्षद माता का मन्दिर जो सम्भवतया सुदूर से आते पोत के संकेतक के रूप में सहायक होता होगा। मियानी में एक छोड़ी एवं लम्बी खाड़ी है जो वर्तमान में मछुआरों की नावों को संरक्षण देती है। ऐतिहासिक संदर्भों के अनुसार मियानी की खाड़ी में बड़े-बड़े पोत लंगर डालते थे। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए खाड़ी के मुहाने पर लगभग 500 मीटर तट से दूर समुद्र में अन्तर्जलीय सर्वेक्षण किया गया जो हर्षद माता मन्दिर से 1 किलोमीटर दक्षिणपूर्व में स्थित है। समुद्र तलहटी में काफी विभिन्नता है।

— जैसे कुछ जगहों पर यह पथरीली और कहीं पर रेतीली है तथा कई स्थलों पर समुद्री वनस्पति भी मौजूद है। पानी की गहराई 5 से 7 मीटर के मध्य है एवं पानी में पारदर्शिता बहुत कम है। अन्तर्जलीय सर्वेक्षण द्वारा बारह पत्थर के लंगर मिले हैं (चित्र सं. 3) जिनमें हिन्द अरब प्रकार त्रिकोणीय प्रकार एवं गोलाकार प्रमुख हैं।

दो लंगर मिश्रित या त्रिकोणीय आकार के हैं जिसमें से एक लंगर टूटा हुआ है और केवल ऊपर का एक छिद्र शेष है। इसका



Chitr संख्या 2 : भोखिरा की उत्खनित ट्रेंच में आवास होने के संकेत

बहुत ही अनियमित आकार है, तथा चूने पत्थर का बना हुआ है। इस वर्ग का दूसरा लंगर पूर्णतया सुरक्षित है (चित्र सं. 4) और इसका आकार त्रिकोणीय है। इसमें तीन छिद्र हैं और सभी गोलाकार हैं। यह लंगर भी चूना पत्थर का बना हुआ है।

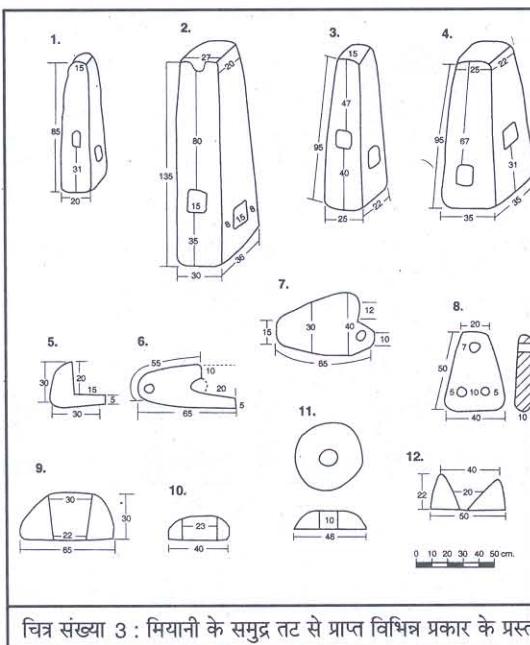
दूसरे वर्ग के लंगर को हिन्द अरब प्रकार के लंगर कहते हैं और इनकी संख्या 6 है। इनमें से 4 लंगरों का आकार पूर्ण है और अन्य दो लंगर टूटे हुये हैं। कुछ लंगरों का ऊपरी छिद्र मौजूद नहीं है। क्रमशः एक एक लंगर रेतीले पत्थर एवं बैसाल्ट का बना हुआ है और शेष लंगर चूना पत्थर के हैं।

तीसरे वर्ग के लंगरों को गोलाकार या रिंग स्टोन लंगर कहते हैं। मियानी से इस वर्ग के कुल 4 लंगर मिले हैं। सभी लंगर चूना पत्थर के होने के कारण अपरदित हुए हैं जिससे उनका छिद्र काफी बड़ा हो गया है।

### विसवाड़ा या मूल द्वारका

कुछ दन्तकथाएं महाभारत में वर्णित द्वारका को इस मूल द्वारका से जोड़ती हैं लेकिन उत्खनन के फलस्वरूप केवल ऐतिहासिक काल के अवशेष पाए गए हैं। और अधिकतर विद्वानों ने इसे महाभारतकालीन द्वारका होने से नकार दिया है। लेकिन हमारी सच यहां से गुजरती एक खाड़ी पर है जो लगभग 20 किलोमीटर उत्तर में स्थित किन्दर खेड़ा तक जाती है और किन्दर खेड़ा के नाम से इस खाड़ी का नाम किन्दरी खाड़ी पड़ा है।

यहां अन्तर्राष्ट्रीय सर्वेक्षण तट से कोई 500 मीटर समुद्र में 5 से 7 मीटर पानी की गहराई में किया गया। समुद्री तलहटी में अधिकतर पथरीले एवं यदा-कदा रेतीले क्षेत्र हैं। कई जगहों पर घनी समुद्री वनस्पति देखी जा सकती है। पानी की पारदर्शिता काफी अच्छी है। सर्वेक्षण के दौरान कुल 14 लंगर मिले हैं (चित्र सं. 5)। मियानी की भाँति यहां पर भी तीन



चित्र संख्या 3 : मियानी के समुद्र तट से प्राप्त विभिन्न प्रकार के प्रस्तर

तरह के लंगर हैं लेकिन यहां पर मिश्रित या त्रिकोणीय लंगरों की मात्रा बहुत है जिनकी कुल संख्या 10 है। कुछ लंगरों का आकार बहुत बड़ा है जो बड़ी नावों के हो सकते हैं। इस वर्ग के सभी लंगर चूना पत्थर के बने हुये हैं। कुछ लंगरों का ऊपरी भाग टूटा हुआ है। दूसरे वर्ग के लंगरों की संख्या सिर्फ 2 है और इनमें एक पूर्ण है जबकि दूसरे लंगर का नीचे का भाग टूटा हुआ है। दोनों लंगर बैसाल्ट पत्थर के बने हुए हैं (चित्र सं. 6)। तीसरे वर्ग के लंगरों की संख्या सिर्फ दो है और दोनों ही चूना पत्थर के बने हुए हैं।

### पोरबन्दर

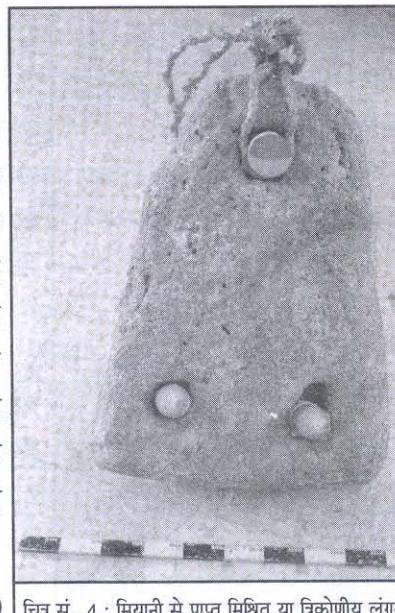
पोरबन्दर तट पर लगभग 100 वर्ष पुराना ब्रिटिश काल का एक लाइट हाऊस जीर्ण अवस्था में स्थित है। पोरबन्दर में अन्तर्राष्ट्रीय सर्वेक्षण वर्तमान बन्दरगाह के पश्चिम में किया गया। इस क्षेत्र की तलहटी काफी असमतल है। कुछ क्षेत्र पथरीले हैं जबकि कुछ जगहें रेतीली हैं। सर्वेक्षण के दौरान सिर्फ एक ब्रिटिश काल का लोहे का लंगर मिला है। इसके अलावा अन्य कोई अवशेष प्रकाश में नहीं आए हैं। पोरबन्दर के पूर्व में अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र से एक हिन्द अरब लंगर मिला है।

### चर्चा

पोरबन्दर क्षेत्र में तटीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सर्वेक्षण से पुरातात्त्विक अवशेषों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी हासिल हुई है। यह पहला भौका है जब पोरबन्दर नगर से सिन्धु सभ्यता के अवशेष मिले हैं। समुद्री संसाधनों की उपलब्धता एवं खाड़ी के पास की स्थिति इनके आवास का आकर्षण रहा होगा। प्राचीन सभ्यता के लोगों ने पोरबन्दर खाड़ी का प्रयोग बहुत प्रभावी ढंग से किया था इसकी पुष्टि खाड़ी से प्राप्त जेट्रियों से होती है।

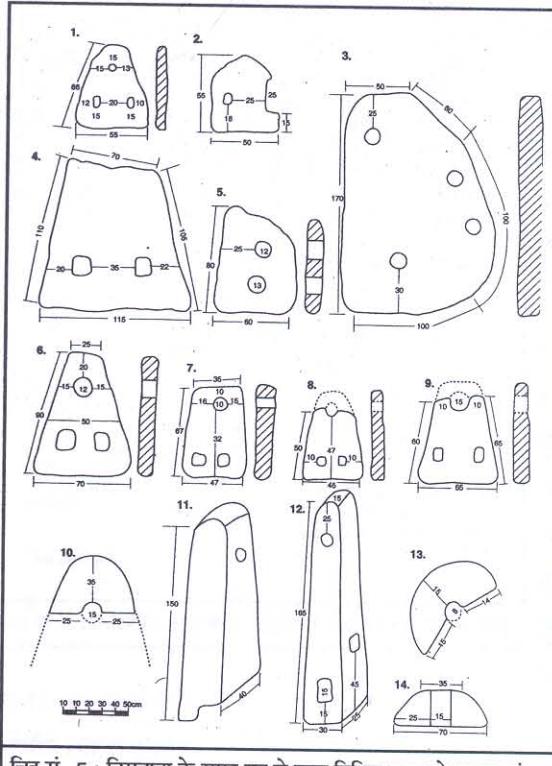
पोरबन्दर मध्य काल में अत्यन्त महत्वपूर्ण बंदरगाह था लेकिन आधुनिक बन्दरगाह के विकास से प्राचीन अवशेष या तो नष्ट हो गए या फिर नीचे दब चुके हैं।

मियानी एवं विसवाड़ा से काफी संख्या में लंगर मिले हैं जो



चित्र सं. 4 : मियानी से प्राप्त मिश्रित या त्रिकोणीय लंगर

द्वारका से प्राप्त लंगरों से मेल खाते हैं। समुद्री पुरातत्व में लंगरों का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि समुद्री गतिविधियां एवं परिवहन नावों या पोतों द्वारा किया जाता है। और लंगर प्रत्येक नाव व पोत का एक महत्वपूर्ण अभिन्न अंग है। अक्सर एक नाव में कई लंगर होते हैं क्योंकि जब लंगर नाव को स्थिर करने के लिये समुद्री तलहटी में डाला जाता है तो कभी-कभी लंगर पत्थरों के मध्य में फंस जाता है जिसे निकालना लगभग असम्भव होता है तो उसकी रस्सी नाव से काट दी जाती है और लंगर हमेशा के लिये तलहटी पर रह जाता है। इन लंगरों के अध्ययन से प्राचीन व्यापारिक मार्ग पत्तन एवं तकनीकी जानकारी प्राप्त होती है। लंगरों का उद्भव एवं विकास मानव सभ्यता के विकास के साथ जुड़ा है। नौवहन के विकास के साथ-साथ लंगरों में परिवर्तन हुए हैं।

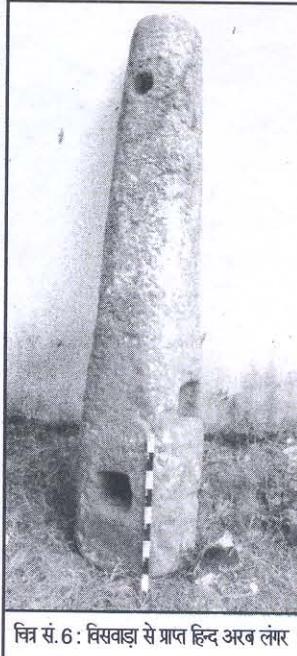


चित्र सं. 5 : विश्वाढा के समुद्र तट से प्राप्त विभिन्न प्रकार के प्रस्तर लंगर

इस क्षेत्र से प्राप्त लंगर अधिकतर चूना पत्थर के बने हैं जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि ये लंगर स्थानीय मछुवारों व व्यापारियों की नावों के होंगे। कुछ लंगर बैसाल्ट पत्थर के हैं जो सम्भवतया दूसरे क्षेत्रों से आये होंगे। मियानी एवं मूल द्वारका ऐतिहासिक एवं मध्यकाल में महत्वपूर्ण पत्तन रहे होंगे। मूल द्वारका में सर्वेक्षण के दौरान एक ही स्थान पर 10 पत्थर के लंगर मिले जो यह संकेत करते हैं कि यह नाव खड़ी करने का एक पुराना स्थान रहा होगा या फिर कोई नाव इतने लंगरों के साथ डूब गयी होगी। लेकिन ये लंगर किसी डूबी नाव के अवशेष हैं कहना सम्भव नहीं लगता है क्योंकि पत्थर के लंगर के अलावा और कोई अवशेष नहीं मिले हैं।

अधिकतर लंगर 5 से 7 मीटर की गहराई में खाड़ियों के मुहाने पर मिले हैं जो संभवतः उस समय में पोत को लंगर करने के लिये सबसे उपयुक्त गहराई एवं स्थल रहे होंगे। तत्पश्चात छोटी नावों द्वारा पोत का सामान खाड़ी के रास्ते से ऊपर लाया जाता होगा।

उच्च ज्वारीय अन्तर होने के कारण खाड़ी का उपयोग अक्सर उच्च ज्वार के समय में किया जाता होगा क्योंकि इसका प्रचलन अभी भी जारी है।



चित्र सं. 6 : विश्वाढा से प्राप्त हिंदू अरब लंगर

## तिथियां

सम्बन्धित पुरातात्त्विक साक्षों के अभाव में पत्थर के लंगरों की तिथि निर्धारित करना बहुत ही कठिन कार्य है। सम्बन्धित तिथि योग्य अवशेषों के अभाव में लंगरों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है जो उनके आकार-प्रकार पर आधारित होता है। भूमध्यसागर में पत्थर के लंगरों की तिथियां मध्य तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व से लेकर सत्रहवीं शताब्दी ईसवी तक हैं। भारत में सबसे प्राचीन लंगर लोथल और कुन्तासी से मिले हैं जो सिन्धु घाटी सभ्यता वेद समकालीन हैं। लेकिन पोरबन्दर क्षेत्र से प्राप्त लंगर इनसे बिलकुल भिन्न हैं इसलिये इन

लंगरों को हड्डपाकालीन सभ्यता से सम्बद्धित नहीं किया जा सकता है। हाल ही में भारत के प्राचीन बन्दरगाहों के सर्वेक्षणों से विशेषकर द्वारका, बेटद्वारका एवं सोमनाथ गुजरात तट पर विजयदुर्ग, सिन्धुदुर्ग, महाराष्ट्र तट पर, लक्ष्यद्वीप में तमिलनाडु तट से बहुत बड़ी संख्या में लंगर मिले हैं और इन बन्दरगाहों की तिथि ऐतिहासिककाल से पहले की नहीं है। ये बन्दरगाह मध्यकाल में काफी व्यस्त पत्तन रहे थे इसलिये भारत में पत्थरों के लंगरों की तिथि 8वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी ईसवी के मध्य होगी। एक पुराने मछुवारे से साक्षात्कार के दौरान यह ज्ञात हुआ कि त्रिकोणीय लंगर 70 वर्ष पूर्व तक प्रयोग किया जाता था लेकिन यह मछुवारा प्रिज्मैटिक या ग्रैपनल तरह के लंगर से परिचित नहीं था जो इस बात की ओर संकेत करता है कि हिन्द-अरब व्यापार समाप्त होने के साथ-साथ भारतीय तट पर ग्रैपनल लंगर का प्रयोग समाप्त हो गया लेकिन त्रिकोणीय लंगर स्थानीय

मछुआरों द्वारा प्रयोग किये जाते रहे होंगे। इस प्रकार ओखामंडल से प्राप्त लंगरों की तिथियां आठवीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी ईसवी के मध्य होने की संभावना है।

**निष्कर्ष :** पोरबंदर एवं इसके आस-पास समुद्री पुरातत्व सर्वेक्षण से प्राचीन समुद्री गतिविधियों पर महत्वपूर्ण जानकारी हासिल हुई है। मियानी एवं बिसवाड़ा ऐतिहासिक एवं मध्यकाल में प्रमुख बंदर गाह थे। प्राचीन नौ-परिवहन में खाड़ियों का प्रमुख योगदान है क्योंकि खाड़ी क्षेत्र किसी भी तरह की समुद्री हलचल से दूर होते हैं। खुले समुद्र में पोत को लंगर करने की उपयुक्त गहराई पांच से सात मीटर के मध्य होती थी। जैसा कि सर्वविदित है भारत की नौ-परिवहन एवं अन्य समुद्री गतिविधियां अति प्राचीन हैं। मेसोपोटामिया

के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि सिन्धु सभ्यता के लोग अपनी नावें खाड़ी के देशों तक लेकर जाते थे। ऐतिहासिक काल में भूमध्य सागर के नाविक भारत में समुद्री मार्ग से व्यापार करने के लिए आए। मध्यकाल में खाड़ी देशों की नावें भारतीय तट पर बड़ी मात्रा में आती थीं। इन सभी गतिविधियों की जानकारी समुद्री पुरातात्त्विक सर्वेक्षणों से प्राप्त अवशेषों से की गई जिसमें पत्थर के लंगरों का महत्वपूर्ण स्थान है। लंगरों की संख्या एवं प्रकार प्राचीन भारत की व्यस्त समुद्री गतिविधियों पर प्रकाश डालते हैं। ■

## शोषण का हथियार है अंग्रेजी

रामननोहर लोहिया

- अंग्रेजी, हिन्दुस्तान को ज्यादा नुकसान इसलिये नहीं पहुंचा रही है कि वह विदेशी है, बल्कि इसलिये कि भारतीय प्रसंग में वह सामन्ती है। आबादी का सिर्फ एक प्रतिशत छोटा सा अल्पमत ही अंग्रेजी में ऐसी योग्यता हासिल कर पाता है कि वह इसे सत्ता या स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करता है। इस छोटे से अल्पमत के हाथ में विशाल जनसमुदाय पर अधिकार कर शोषण करने का अधिकार है – अंग्रेजी।
- अंग्रेजी अपने क्षेत्र में लावण्यमयी भाषा है। फ्रैंच जितनी चरपरी नहीं, वा ही जर्मन जितनी गहरी; पर ज्यादा परिमित, परिग्राही और उदार है। जब हम ‘अंग्रेजी हटाओ’ कहते हैं तो हम यह बिल्कुल नहीं चाहते कि उसे इंग्लिस्तान या अमेरिका से हटाया जाय, और न ही हिन्दुस्तानी कालेजों से बशर्ते वह ऐच्छिक हो। पुस्तकालयों से उसे हटाने का सवाल तो उठता ही नहीं।
- कोई एक हजार वर्ष पहले हिन्दुस्तान में मौलिक चिन्तन समाप्त हो गया। अब तक उसे पुनः जीवित नहीं किया जा सका है। इसका एक बड़ा कारण है अंग्रेजी की जकड़न। अगर कुछ अच्छे वैज्ञानिक वह भी कोई बहुत कम और सचमुच कोई बहुत बड़े नहीं, हाल के दशकों में पैदा हुए हों तो इसलिये कि वैज्ञानिकों का भाषा से उतना वास्ता नहीं पड़ता जितना कि संख्या और प्रतीकों से पड़ता है। सामाजिक शालों और दर्शन में तो बिल्कुल शून्य है। मेरा मतलब उनके विचारणात्मक अंग से नहीं बल्कि आधार से है। भारतीय विद्वान जितना समय चिन्तन की गहराई और विन्यास में लगाते हैं, तो अगर ज्यादा नहीं तो कम से कम उतना ही समय उच्चारण, मुहावरे और लच्छेदारी में देते हैं। यह तथ्य उस शून्य का कारण है। मंच पर क्षणभंगुर गर्व के साथ चौकड़ियाँ भरने वाले स्कूल-विद्यार्थी से लेकर विद्वान तक के ज्ञान को अभिशाप लग गया है। भारतीय चिंतन का अभिप्रेत विषय-ज्ञान नहीं, बल्कि मुहावरेदारी और लच्छेदारी बन गया है।
- हिन्दी या दूसरी भारतीय भाषाओं की सामर्थ्य का सवाल बिल्कुल नहीं उठना चाहिये। अगर वे हैं तो इस्तेमाल के जरिये ही उन्हें समर्थ बनाया जा सकता है। पारिभाषिक शब्दावली निश्चित करने वाली या कोश और पाठ्य पुस्तक बनाने वाली कमेटियों के जरिये कोई भाषा समर्थ नहीं बनती। प्रयोगशालाओं, अदालतों, स्कूलों आदि जगहों में इस्तेमाल के द्वारा ही कोई भाषा सक्षम बनती है। पहले-पहल उसके इस्तेमाल से कुछ गड़बड़ हो सकती है, पर सामन्ती या अल्पमती भाषा से जो मुसीबत होती है, हर हालत में उससे ज्यादा नहीं होगी। पहले भाषा की स्थापना होती है और फिर उसमें निखार आता है। इस प्रक्रिया को उलट देने से भारत ने अपने-आप को मूर्ख बना डाला है। इस उल्टी प्रक्रिया से भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी के जितना निखार कभी नहीं आ सकता। और इसलिए उनकी स्थापना का सवाल कभी उठेगा ही नहीं। जबतक मूलभूत उपचार नहीं किया जाता, हमेशा एक तरफ बांग्ला, तमिल या हिन्दी और दूसरी तरफ अंग्रेजी के बीच विकास का अन्तर रहेगा।